डॉ० सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य, दीनानाथ पाण्डेय महिला कालेज, शाहाबाद, समाजशास्त्र विभाग, ग्रामीण समाजशास्त्र, पत्र सं०- III, बी० ए० (प्र), खण्ड- III

ग्रामीण समुदाय की अवधारणा एवं विशेषताएँ :-

ग्रामीण समुदाय ऐसे समुदाय हैं जो प्रकृति पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं, जिनका एक निश्चित स्थान है, जिनकी आर्थिक प्रकृति से प्राप्त या उत्पन्न हुई वस्तुओं से चलती है तथा जिनका आकार छोटा होता है। ग्रामीण समुदाय को परिभाषित करते हुए मेरिल और एल्ड्रिज लिखते हैं "ग्रामीण समुदाय के अन्तर्गत संस्थाओं और ऐसे व्यक्तियों का संकलन होता है जो छोटे से केन्द्र के चारों ओर संगठित होते हैं तथा सामान्य प्राकृतिक हितों में भाग लेते हैं।" ग्रामीण समुदाय में मानव के सभी हितों की पूर्ति होती है। सैण्डरसन ग्रामीण समुदाय को परिभाषित करते हुए लिखते हैं "एक ग्रामीण समुदाय में स्थानीय क्षेत्र के लोगों की सामाजिक अंतःक्रिया और संस्थाएं सम्मिलित हैं जिनमें वह खेतों के चारों ओर बिखरी झोपड़ियों तथा पुरवा या ग्रामों में रहते हैं और जो उनकी सामान्य क्रियाओं का केन्द्र है।"

ग्रामीण समुदाय की विशेषताएँ :- ग्रामीण विशेषताओं को हम ग्रामीण जीवन का अंग कह सकते हैं। इन विशेषताओं के

आधार पर ही गाँव और नगर में भेद किया जाता है। विशेषताएँ निम्न हैं -

(1) जीवन-यापन प्रकृति पर निर्भर - ग्रामीण समुदाय के लोगों का जीवन कृषि, पशुपालन, शिकार, भोजन संग्रह करने आदि की क्रियाओं पर निर्भर है। इन सभी कार्यों के लिए व्यक्ति को प्रकृति के प्रत्यक्ष और निकट सम्पर्क में आना होता है। वर्षा, शीत, गर्मी, आदि कृषि को प्रभावित करते हैं और कृषि ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय है जबकि नगर का जीवन आधार उद्योग है।

(2) समुदाय का छोटा आकार - प्रकृति पर ~~प्रत्यक्ष~~ प्रत्यक्ष निर्भरता समुदाय के आकार को छोटा बनाती है। इसका कारण यह है कि कृषि कार्य अथवा पशु-चारण में जीवन-यापन के लिए व्यक्ति भूमि की मात्रा अधिक चाहिए अन्यथा सभी लोगों का जीवन निर्वाह सम्भव नहीं हो पाता और उन्हें स्थान छोड़कर दूसरी जगह जाना होता है। नगर उद्योगों पर ~~आधारित~~ आश्रित होते हैं, जहाँ हजारों आदमी एक ही व्यवसाय अथवा कारखाने में काम करते हैं।

क्रमशः शेष अगले पृष्ठ पर